श्रमण २००७ १० (फोल्डर नं. ०२५०६२)

सम्पादक

डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय (अंग्रेजी), डॉ. विजय कुमार (हिन्दी)

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

बौद्धों का शून्यवाद – साहित्यवाचस्पति – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ---------- १-६

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण – डॉ. मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी ---------- ७-१५

आचारांग में भारतीय कला – डॉ. हरिशंकर पाण्डेय ---------- १६-२२

जैन धर्म और ब्रज – डॉ. एस. पी. सिंह ---------- २३-३१

मध्ययुगीन संत – काव्य में जैन न्याय की निक्षेप – पद्धति – साध्वी डॉ. अर्चना ---------- ३२-३७

जैन दर्शन में प्रत्यभिज्ञान प्रमाण – डॉ. भूपेन्द्र शुक्ल ---------- ३८-४२

हठयोग एवं जैनोग में प्रत्याहार का स्वरुप – एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. राज नारायण सिंह ---------- ४३-४६

जैन पोथियों में जैनेतर दृश्य – डॉ शैलेन्द्र कुमार ---------- ४७-५१

जैन दर्शन एवं श्री अरविन्द के दर्शन में चेतना का स्वरुप – एक तुलनात्मक सर्वेक्षण – डॉ. अवनीश चन्द पाण्डेय ---------- ५२-५८

The Contribution of Buddhism to the World of Art & Architecture Venerable – Dr. Rewata Dhamma----------61-72

Jaina Architecture and Images of Western India under the Western Ksatrapas – Prof. Rasesh Jamindar----------73-83

The Concept of Mind (Manas) in Jaina Philosophy – Dr. S. P. Pandey----------84-97

Jainism in Bengal – Dr. Harihar Singh----------98-103

पार्श्वनाथ विधापीठ के प्राग्डण में ---------- १०४-१०७

जैन जगत ---------- १०८-११२

साहित्य सत्कार ---------- ११३-११६

सुरसुन्दरीचरिअं – श्रीमद्धनेश्वर सूरि ---------- २१९-३२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org